Gandhi Memorial College Of Education & Training, Jammu

बोधि पुस्तक पर्व

• द्वितीय बन्ध

तनिक ठहरो समुद्र

रंजना श्रीवास्तव

Digitized by National Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तनिक ठहरो समुद्र

(कविता-संग्रह)

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

रंजना श्रीवास्तव

G. M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Call No. 4944
Date 27-12-2023

बोधि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बोधि पुस्तक पर्व

बोधि प्रकाशन सुधी पाठकों के लिए श्रेष्ठ साहित्यिक पुस्तकें उचित मूल्य पर प्रकाशित करता है। पुस्तक-पर्व योजना के तहत चुनिंदा साहित्यकारों की पुस्तकें पेपरबैक में उपलब्ध कराई जा रही हैं। दस पुस्तकों के एक सैट की कुल कीमत मात्र 100 रुपये है। इस योजना में कुल दस सैट प्रस्तावित हैं।

प्रथम सैट में- 1. जहाँ एक उजाले की रेखा खिंची है : नंद चतुर्वेदी, 2. भीगे डैनों वाला गरुण : विजेन्द्र, 3. आकाश की जात बता भइया : चन्द्रकान्त देवताले, 4. प्रपंच-सार-सुबोधनी : हेमंत शेष, 5. कुछ इधर की कुछ उधर की : हेतु भारद्वाज, 6. जब समय दोहरा रहा हो इतिहास : नासिरा शर्मा, 7. तारीख़ की खंजड़ी : सत्यनारायण, 8. आठ कहानियां : महीप सिंह, 9. गुडनाइट इण्डिया : प्रमोद कुमार शर्मा, 10. घग्घर नदी के टापू : सुरेन्द्र सुन्दरम्।

द्वितीय बन्ध (सैट) में प्रकाशित पुस्तकें हैं-

करतूते मरदां (कहानी)	:	मन्नू भंडारी
एक औरत : तीन बटा चार (कहानी)	:	सुधा अरोड़ा
पाटी (लेख)	:	चित्रा मुद्गल
पढ़ते, लिखते, रचते (विविध)	:	ममता कालिया
कही अनकही (स्त्री-विमर्श)	:	कमल कुमार
केयर ऑफ स्वात घाटी (कहानी)	:	मनीषा कुलश्रेष्ठ
तनिक ठहरो समुद्र (कविता)	:	रंजना श्रीवास्तव
सदी के पार (कविता)	:	पद्मजा शर्मा
विमर्श और विस्तार (आलोचना)	:	प्रमिला के पी
खिरनी की छांह (लम्बी कहानी)	:	प्रीता भार्गव

© रंजना श्रीवास्तव
प्रथम संस्करण : जून, 2011
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण छायाचित्र : डॉ. दिनेश सेठी, दिल्ली छावनी

बोधि प्रकाशन, जयपुर के लिए तरु ऑफसेट, जयपुर से मुद्रित एवं कार्यालय बोधि प्रकाशन, एफ-77 सेक्टर 9, रोड नं. 11, करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर-302006 से प्रकाशित।
दूरभाष : 0141-2503989, 98290-18087

₹ 10/-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जहाँ कविता के स्पन्दन में
प्राणों की कठपुतली
जीवन से करती है संवाद...
जहाँ तरलता की नदी बहती है
जहाँ सपनों की फसलें लहलहाती हैं
जहाँ आँसुओं से धुलकर कोई चेहरा
हो जाता है निष्पाप
...उन सबके लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

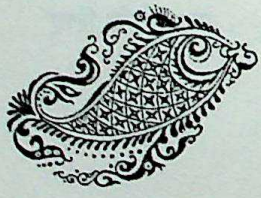

बाकी है आँच
अभी इतना भी
मरा नहीं है आदमी
अभी खून पूरी तरह सफेद नहीं हुआ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

अमृत बनाने की कोई मशीन है आत्मा	7
कुछ भी मुश्किल नहीं	9
क्या कहना है कामरेड!	11
यह ख़बर एक झुनझुना है	13
अनुभूतियों के ताप से जाना	15
उदासी से पूछो	16
सुराखों से भी आती है धूप	17
मेरे तुम	18
तपती दोपहरी में उतरती है सांझ	20
गतियाँ ठहर जाती हैं...	22
उम्मीद...	23
कुछ ख़्वाब हँसी जैसे थे	24
तनिक ठहरो समुद्र	25
आईना पूछो	26
तुम्हारी उपस्थितियाँ	27
अवरोधों की प्रश्नावलियाँ	28
अब जबकि थमी हुई है पृथ्वी	30
आँधी बन जाता है नेह	32
अंधकार के काले कड़ाह में	34
कोई कुछ नहीं बोलेगा	35
बुरे वक़्त में	37
सबकी अंगीठियाँ तलाश रहा है	39

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विज्ञापन की रुलाई	42
जिसके होने में बची रहती हूँ मैं	44
पिता झोले में भरकर स्वप्न लाते थे	46
उसके चेहरे की धूप	48
मेरी आवाज़	51
हम जब अमृत उगायेंगे	54
उन्हें कोई जंगल क्यों नहीं अपनाता	56
वसंत की हथेली पर	58
एक कोरा कागज है दुख	60
माँ की पुरानी लालटेन	62
हरे रंगों में शामिल हो जाता है	64
भीगने लगता है तकिया	66
बारिश है लड़की	67
वह तुम होते हो	68
था कुछ जो खींचता था	70
कहो क्या करूँ मैं	72
हरियाली की मर्यादाएँ	74
कुबूलनामा	76
और तब शायद तुम भी	79
हम पहाड़ हो जाना चाहते हैं	82
संधियाँ पराजय के पश्चात् ही क्यों	84
भीतर कोई आईना है	86
स्त्री जब भी रोयेगी	88
जब तुम हो तो क्यों...	90
चेहरे जंगल बन चुके थे	92
लाइव टेलीकास्ट	95

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अमृत बनाने की कोई मशीन है आत्मा

जब आसमान से टूटकर
हो रही होगी बारिश
और बिजलियाँ क्रोध
में चीख-रही होंगी
सोच रहा होगा किसान
खेतों और पशुओं की
सुरक्षा के बारे में
अनियंत्रित नियमों से
गुजर रहा होगा
नियंत्रित के समाधान का मशविरा
इस तहस-नहस होती दुनिया में
बचाए जाने का संकल्प
विनाश की मिट्टी में
जीवन के
बीज बो रहा होगा
एक स्त्री से पूछो
कितनी बार
बिखरती साँसों के बीच
रोप लेती है
गृहस्थी की मुरझाई
फसलों का बिरवा
और हँसने लगते हैं
बुझते हुए चिराग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी कोख में पल रहे
भ्रूण को
छाती से लगाकर
एक मनुष्य को बड़ा करने की
सम्पूर्ण ताकत से
लबरेज होता है उसका सीना
तुमने देखी है कभी
प्रार्थना में रत
भक्ति की अटूट निष्ठा का संकल्प
ईश्वर, असंभव के
तमाम दरवाजों से
देने लगता है दस्तक
कि कहीं भी व कैसी भी हों परिस्थितियाँ
कुम्हलाई हुई जिद् के जरिए
पवित्र हो उठती हैं दूषित हवाएँ
कितना भी बर्बर हो जाए
समय की वासनाओं का
निर्मम संकल्प
दरिया सोख सकता है
समंदर की छाती में
फैलता हुआ विष
अमृत बनाने की
कोई मशीन है आत्मा
बस एक निष्पाप
अवधारणा की
खुशबू को बचाए रखना है
अपनी-अपनी
रूह के दरमियान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ भी मुश्किल नहीं

कुछ भी मुश्किल नहीं
दु:ख
इतना ताकतवर नहीं
कि हँसी के फूलों से
कर सके प्रतिस्पर्धा
और न ही
इतना कमजोर है
मनुष्य
कि उसे मोम की तरह
पिघलाकर
उसके हिस्से की रोशनी पर
किया जा सके आधिपत्य
पत्थर संबंधों की
व्याख्या में
पानी के हिस्से का
लोकतंत्र
छटपटाता है जब
तकलीफ सीने से होकर
गुजरती है बेतरतीब
हम विषाद के बादलों में
घिरे जाते हैं
सूरज वहीं होता है
ठीक हमारे पास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बस छू भर देनी है
उसकी देह
बूँदों को धूप में तपाकर
मन के तहखानों में
भर देनी होती है
भीतर की रोशनी
एक भ्रम को
यथार्थ की काया से
अलगाकर
सच्चाई के रूबरू
खड़ा कर देना होता है।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या कहना है कामरेड!

वह जिस चाकू से
काटती थी सब्जी
उससे दुख का गला
रेत सकती थी
पर किसी हत्या के अपराध में
शामिल होने से
कतराती रही उम्र भर
उसके चूल्हे में जो आग थी
जला सकती थी
उसकी विपन्नता के
सारे संकल्पों को
पर उसने उस पर
सिर्फ रोटियां सेंकीं
और परिवार के हिस्से में
भूख से लड़ने की
सारी विपदाओं को
धुआँ हो जाने दिया
उसने उन हथियारों को
जो उसकी रसोई का हिस्सा थे
और उसकी देह व मन के भी
प्रतिशोध या प्रतिकार की शैली में
सक्रिय नहीं होने दिया
उसकी गुफाओं के अंधेरे में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कई बार सूरज चमका
और आसमान में
व्यवस्थित हो गया
पर वह धरती बनी रही
वह दरवाज़े बंद करती रही लगातार
लोग उसमें प्रवेश करते रहे
उससे बाहर जाते रहे
उसका अपने बारे में
जानना इतना कम हुआ
कि उसके बारे में जानने लगा
उसका घर-परिवार
उसका समाज
यहाँ तक कि उसका ईश्वर भी
यह डुगडुगी पीटी गयी
कि जब भी अपने बारे में
सोचेगी स्त्री
अनैतिक हो जायेगी
उसकी सोच
मुल्ला-मौलवी, कुल-पुरोहित
देवी-देवता सब के सब
कुपित हो जायेंगे
अब इन सारे कुपितों की
सनकी बिरादरी में
एक अनैतिक स्त्री का समय
अपने झंडे को
दे रहा है लाल सलाम
इस क्रांति के बारे में
तुम्हारा क्या कहना है
कामरेड!
जो घर से चलकर
सड़कों पर उतर आयी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह ख़बर एक झुनझुना है

यह एक रेप केस का
लाइव टेली कास्ट है
उत्तेजना है, भीड़ है
आवाज़ें हैं पुलिस है
सबूत है, गवाह है
आरोप-प्रत्यारोप है
माफी है और सज़ा की
दरख़्वास्त भी
यह ख़बर एक झुनझुना है
जिसे सब
अपने-अपने तरीके से
बजा रहे हैं
मीडिया, पत्रकार, राजनीतिज्ञ
पर कोई इस ख़बर के
दुख के भीतर नहीं है
कोई वहाँ नहीं है
जहाँ लावा पिघल रहा है
और फैल रही है आग
कोई वहाँ भी नहीं है
जहाँ से फेंकी गयी थी
माचिस की तीली
सब के सब
अख़बार बने हुए हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और ख़बर के आईने में
देख रहे हैं
अपनी-अपनी शक्लें
अपना-अपना कद
कितना ऊँचा हुआ है
इसकी फिक्र में
ख़बर के चेहरे पर
चिपका रहे हैं विज्ञापन
विज्ञापन
एक नकली दुनिया का
मानचित्र है
जो कभी नहीं बदल सकता
असल की तक़दीर
असल की
तक़दीर बदलने के लिए
जड़ से सोचा जाना होगा
फुनगी पकड़कर
पेड़ को हिलाने से
कैसे काँपेगी भला पृथ्वी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुभूतियों के ताप से जाना

पूर्णविराम की शैली में
प्रकट हुआ था दु:ख
अनुभूतियों के
ताप से जाना
शुरुआत तो
अभी-अभी हुई है
ज़िंदगी की
अंधेरों से घबराना
अच्छा नहीं है दोस्त
जुगनुओं की चमक को
भला कैसे पहचानोगे
कैसे टटोलोगे
डूबते नक्षत्रों के बीच
वक़्त की धुआंती
लालटेन को
गहरे अंधेरे में ही
साफ की जाती है
लालटेन की
करियाती परछाइयाँ
और लौ तेज करने के लिए
काटी जाती है
तेल से भीगी हुई बाती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदासी से पूछो

आँसुओं की इबारत में ही
क्यों लिखे जाते हैं दु:ख
हँसी की कोठरी में कैद
उदासी से पूछो
खुली हवा में
उसका घूमना कब हुआ
पिछली कई शताब्दियों से
उन आत्महत्याओं का
कोई आँकड़ा नहीं है दोस्त
जो आँखों की झील में
तैरते हुए डूब गये
सपनों की रंगीन तितलियों को
पारदर्शी काँच के खूबसूरत जार में
दफ़ना दिया गया
वर्चस्ववादिता की
पुख़्ता दीवारों में चिनी गयीं
खूबसूरत अनारकलियाँ
पाँच सितारा होटलों के
संगमरमर फर्श पर
चिकनी टाँगों और नशीली आँखों वाली
थिरकती लड़कियों के
भीतर की आग का रंग कैसा है
क्या जान सकोगे कभी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुराखों से भी आती है धूप

तुम खिड़कियाँ बन्द कर दो
सुराखों से भी आती है धूप
हवा अपना रास्ता
खुद बना लेती है
तुमने गमले में जो नागफनी का पौधा रोपा है
उनसे गुलाब की खुशबू उठ रही है
मुझे अपने कमरे की
झिलमिल रोशनी में भी
सब कुछ साफ-साफ दिखायी देता है
तुम्हारी धुली हुई शर्ट पर
जब भी करती हूँ इस्त्री
सुलझा देती हूँ सारी की सारी सिकुड़नें
कल जो फेंका था तुमने
मेरे भीतर का ताप
कचरा समझकर
उसकी कतरनों से
रच रही हूँ कविता
उलझनों के
पहाड़े रटते-रटते
समाधान की उत्तर पुस्तिका
ढूँढ ही लेती हूँ
मुझे जीवन का स्वाद
ऐसे ही मिलता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे तुम

रुदन की
साँवली वीथियों में
टहलता है सन्नाटा
नि:शब्द और कातर
क्षणों का एकाकीपन
उदास परछाइयों की
कथा कहता है
मन भागता है
सुख के दुर्गम जंगलों की ओर
तुम्हारी स्मृतियों की
मद्धिम हँसी
धूप की खिड़कियों में
रोशनी के
कतरों से लिपटी हुई है
तुम्हारे नाम की
कुछ पंखुड़ियों के दरवाजे
लेने लगी हैं आकार
मेरी हवा में
तुम्हारी खुशबुओं के दरवाजे
चरमराते हैं
दु:ख की छोटी-छोटी
गुमटियों में
तुम्हारे अहसास की दुकानें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खोलती हैं
अपना कारोबार
मेरी पृथ्वी पर
हलचल की अनगिन
जल-धाराएं
तुम्हारी नदी में करती हैं
स्नान
बूंदें गिरती हैं
मेरे मन के गीले परिवेश में
तुम्हारी मुस्कान
मुझसे लिपटकर
मुझे चूमती है बार-बार
मेरी निरर्थकता के
हताशाबोध में
तुम्हारी स्नेहिलता की
किलकारियाँ गूँजती हैं
मेरे तुम मेरी ही कोख से
जन्म लेते हो
कई-कई बार
और मेरी साँसों के
आह्लाद में
एक चुटकी सिंदूर
जगमगाता है
तुम्हारे नाम का ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तपती दोपहरी में उतरती है सांझ

भागती हुई दुनिया के नक्शे में
वह एक ऐसा मानचित्र है
गतियाँ अवरुद्ध हैं जहाँ
चोटिल संवेदनाओं के
शोकस्थल में
उपासना के कठोर
नियमों की तरह
वह लौटना चाहती है
जीवन की ओर
मायावी इच्छाओं की
भागती परछाइयों में
सूरज के अनगिनत प्रतिबिम्बों का
स्पर्श करना चाहती है
उसकी गहरी एकांतिकता में
जन्म लेता है कोलाहल
निषेध की गलियों में
स्वीकार के दरवाज़े खुलते हैं
संस्कारों के वाष्पीकरण से
जब बनते हैं बादल
आस्थाओं की पिंडलियाँ
कंपकंपाती हैं
एक नाद जिसकी लय पर
झूमती हैं इन्द्रियाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक सुख जिसकी कोख में
आत्मीयताओं की
स्वप्न मंजरियाँ मुस्कुराती हैं
लुभाती हैं उसे
नींद और भोर की
मुंडेर पर बैठे हुए
पाखी की तरह
देह और मन की शिराओं में
पनीली इच्छाओं की
नदी बहती है
तपती दोपहरी में
उतरती है सांझ
शीतल चाँदनी के परों पर
उसकी पृथ्वी
घूमने लगती है
हर्ष के आवेग में ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गतियाँ ठहर जाती हैं...

ख़ामोशी के
कितने रंग हैं
जिनमें डूबा है
आकाश
उदास कैनवस पर
उत्तप्त लहरें हैं
मैं अपनी अँजुरी में
उठाती हूँ दुःख
और सहेज लेती हूँ
गतियाँ ठहर जाती हैं
मेरी पृथ्वी के नाभिकीय कक्ष में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उम्मीद...

उम्मीद
एक उजाला है
हम टाँग देते हैं
अपने आसमान में
एक रुपहला चन्द्रमा
भय की विकृत
वासनाओं से मुक्त
निर्भय इच्छाओं की
पवित्र मुस्कान जैसी
हमारी धरती पर
उत्सव-सा
खिलती है उम्मीद
झड़ जाती है
सूखे पत्तों वाली
उदास ऋतुएँ
हरे रंगों वाला ख़्वाब
पनपता है
मौसम की चादर में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ ख़्वाब हँसी जैसे थे

कुछ ख़्वाब
हँसी जैसे थे
जहाँ दूधिया हसरतें
नीले सपनों की तरह
फैली हुई थीं
निद्रा और जागरण
अपने-अपने काल में
अपनी-अपनी पृथ्वी पर
बसा रहे थे
रोशनियों के गाँव
हर जगह था चाँद
अँधेरे को चीरता
पढ़ता हुआ
कुरान की आयतें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तनिक ठहरो समुद्र

तनिक ठहरो समुद्र
घायल समय की
पनीली नदी में
बाकी है आँच
अभी इतना भी
मरा नहीं है आदमी
अभी खून पूरी तरह सफेद नहीं हुआ
आँखों में बची है आग
कोई दु:ख हमें मथकर
अमृत बनाने को लालायित है
कोई पश्चात्ताप तपकर
कुंदन होना चाहता है
अभी बाकी है छतों पर
गौरैयों वाली शाम
तुलसी के दीये
और आँगन में घाम
तनिक
स्थिर हो जाओ समुद्र
क्रोध को पी लो
अमृत की तरह
भीतर के आवेग को चंदन बना लो
अभी रात पूरी तरह काली नहीं हुई
प्रतीक्षाएँ बाकी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आईना पूछो

आईना पूछो
चेहरे के भीतर का भूगोल
भ्रमों एवं संशयों के
पथरीले पहाड़ों से
निकली हुई नदी का पता पूछो ·
पूछो आस्थाओं की
खिसकती ईंटों से
ढहती इमारतों की
खोखली हँसी का राज
आईना पूछो
चेहरे के भीतर के
चेहरे का इतिहास
मौसमों की रंगत में
भटकती रूहों का
पागल आह्लाद
आईना पूछो
सुनहरी धूप के आकर्षण का जादू
जिससे पैदा होता है प्रेम
और आईना पूछो
इस प्रेम से
एक सच्चे
इंसान का पता
और उसकी शक्ल में
हमेशा के लिए बस जाओ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारी उपस्थितियाँ

जीवन के हर चक्रवात में
ठहरी हवाओं के दृढ़
संकल्पों सी
तुम्हारी उपस्थितियाँ
तसल्ली के गुलदस्ते
सौंपती हैं मुझे
जब भी घिरती हूँ
डूबती आवाज़ों के
घने जंगल में
एक आवाज़
मुझे अपनी भुजाओं में
सँभाल लेती है
मेरी बंद खिड़कियों में
रोशनी की फाँक जैसा
उगता है तुम्हारा सूरज
मेरे दु:ख में घुलकर
तुम्हारी हँसी
खनकती है देर तक
और अँधेरा
छँटने लगता है
मेरी भोर
तुम्हारे कंधे से लगकर
भूल जाती है
अपनी सारी चिन्ताएँ।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अवरोधों की प्रश्नावलियाँ

तुम जब करते हो प्रेम
तुम्हारी स्मृतियों में
रहती है मेरी देह
और मैं
पूरे ब्रह्माण्ड में
फैलाकर तुम्हें गढ़ना चाहती हूँ
एक अभिनव संकल्प
वहाँ जहाँ तक
जाती है दृष्टि
जहाँ तक साँसों
व भावों के संयोजन की
कोमल तिथियाँ
कर सकती हैं इंतज़ार
मैंने फैलाकर अपनी पृथ्वी
रच डाला है तुममें सूरज, चाँद, सितारे
नक्षत्रों का मायाजाल
बारिश की तरह
झरता है आवेग
नदी की पागल वासनाएँ
रौंदने लगती हैं
पानी की आकुल देह
आह ! कितना उज्ज्वल
हो उठता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे भीतर का श्यामल पक्ष
मेरे बौनेपन में
एक विशाल
पृथ्वी का नक्शा
लेने लगता है आकार
मेरा अदना सा अस्तित्व
सामर्थ्य की गरिमा से
पिघलकर
हो उठता है ऊर्जावान
महकने लगते हैं फूल
अवरोधों की प्रश्नावलियाँ
हँसने लगती हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब जबकि थमी हुई है पृथ्वी

कितनी निर्मोह थी
वह आँधी
जो उड़ा ले गयी
समय का
सबसे कीमती पल
कि अब
ढूंढें से भी नहीं मिलता
कोई धुंधला सा भी अक़्स
मेरी सबसे प्रिय पेंटिंग पर
डालकर स्याही
जीवित थे तुम
जो भी और तुम जैसा भी
मुझे प्रिय था जीवन
तुम उसकी मृत्यु की
घोषणाओं से
करते रहते थे
मुझे सावधान
कितनी बार मरी थी
सौ-सौ मौतें
कितनी बार माँ का चेहरा
मेरी सिसकियों में
भीगा था बेतरतीब
अब जबकि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई हलचल नहीं है
चीखता है अतीत का
झुलसा हुआ चेहरा
अब जबकि थमी हुई है
पृथ्वी
मेरे हिस्से की ज़मीन
धंसती रहती है लगातार।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आँधी बन जाता है नेह

मैं ही भीगी थी हर बार
तुम सूखे के सूखे
बिजली की तरह
कौंधती हैं स्मृतियाँ
और आँधी बन जाता है नेह
यह पागलपन की हद है
कि जहाँ पलने लगी है आग
ढूँढती हूँ घने दरख़्तों की
मीठी-सी छाँव
अहम् और ज़िद के
उथले समंदर में
कब से ढूंढ रही हूँ मोती
तुम्हारी
पुरुष कंदराओं में
चीखते अंधकार का उत्सव
पोत देता है
कालिख हर बार
हर बार विवशता
घायल पक्षी की तरह
पंख फड़फड़ाती है
नहीं समझ पाती
कि बिन उधार की किस्मत में
नहीं पैदा हो सकता है प्रेम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि बिन बादल के
भला हो सकती है बरसात
धीरे-धीरे
पिघलने लगी है आँच
धीरे-धीरे
जागने लगी है
सदियों से सोयी हुई स्त्री।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंधकार के काले कड़ाह में

जब मेरी धरती काँपी थी
कितने सहज थे तुम
तुम सूरज की ओर
मुँह करके खड़े थे
और मेरे भीतर देर तक
होती रही थी बारिश
कितना चाहा था
तुम भी भीगो
और तुम्हारी मिट्टी में
बीज बन जाए
मेरे अलगाव का दुःख
पर चाहने से क्या होता है
धुनती हुई छाती में
कैसे खौलता है समंदर
कैसे डूबने लगती है शाम
अंधकार के काले कड़ाह में
मेरे हरे रंगों में झाँकने लगी हैं
नीली परछाइयाँ
कहीं कोई भी कोशिश
नहीं हो पाती मुमकिन
मैं तुम्हें पकड़ने को
जब भी धरती हूँ
आकाश
उलट जाती है मेरी पृथ्वी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई कुछ नहीं बोलेगा

हर तरफ
लपलपाते बाजार की
लालची जिह्वा है
छोटी दुकानों के
कागज की नाव
डूबती जा रही है
मेगा मॉलों के विराट समुद्र में
उधार का सौदा
दूज के चाँद की तरह
छोटा पड़ता जा रहा है।
कैसे खायेगी कुछ
कैसे भरेगी पेट
इस दुनिया की सबसे श्रमशील
व उपेक्षित बिरादरी
उनके हक में
जब भी लिखोगे कविता
दाल और रोटी की तरह
हलचल मचायेंगे शब्द
और उनके पेट में समा जायेंगे
बाजार के मछुआरे
छोटी मछलियों को फँसाकर
जाल में
गरीब की दुकानों पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धावा बोल रहे हैं
क्या यह दुनिया
सिर्फ पूँजीपतियों की है
जो चाहें कर लें और
जैसा चाहें बना दें
इस मिट्टी का स्वभाव
और कोई कुछ नहीं बोलेगा
भूख से होने वाली
इन मौतों के बारे में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बुरे वक़्त में

बुरे वक़्त में
एक भी अच्छा
आदमी नहीं मिला
किसी भी अच्छी किताब का
कोई भी सबक
नहीं पोंछ पाया
आँसू की नर्म व कोमल गर्द
अपने अच्छे कामों की
फेहरिश्त में
बुरे समय का
एक छोटा सा भी पल
नहीं दे पाया मुझे
यक़ीन का
एक हल्का सा भी अंश
अपनी अच्छाइयों के भरोसे
बुरे वक़्त के साथ चल पाना
बेहद-बेहद मुश्किल लगा
बुरे वक़्त के आईने में
वही चेहरे
धूप बनकर चमके
जिनकी पहचान
खो चुकी थी
हमारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंतरंगता के साथ
काम आए ऐसे ही लोग
जो अपने
निकम्मेपन की वज़ह से
मेरे समय से
ख़ारिज हो चुके थे
और वहीं पनपा
विश्वास
जहाँ संशय की
गहरी खाई थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सबकी अंगीठियाँ तलाश रहा है

एक अहमक-सा आदमी
रहता है उसके साथ
आज जब सबके सबब
भाग रहे हैं
अपने-अपने स्वार्थों
और अपने-अपने
घरों की ओर
उसकी बेचैनी में
अक्सर छिपा होता है
कोई और
सड़क पर चलते हुए
किसी और को नहीं
सिर्फ उसे ही दिखायी देता है
कार के नीचे
आता हुआ बच्चा
किसी बूढ़े का टकराकर
गाड़ी से चोट खा जाना
वह उस अहमक आदमी के
नियंत्रण में
निपटा डालता है
सड़क पर फैलता हुआ
जरूरी कारोबार
और ऑफिस में हर बार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीनियर की डाँट के
निशाने पर
ग़ैरजिम्मेदार ठहरा दिया जाता है
घर में बैठे-बैठे
सूँघ लेता है अक्सर
पड़ोसियों के घाव
उनकी बीमारियाँ व दुःख
और चिराग के जिन्न की तरह
ले लेता है संकल्प
कि कब व कैसे
अपनी मदद के भरोसे
पोंछेगा वह
उनकी गीली आँखों का दुःख
पत्नी व बच्चों की नज़र में
निहायत नालायक सा है
उसके भीतर का
पति व पिता
अखबार पढ़ते हुए
सोचों में
घूमने लगता है देश
बेहद तकलीफ
व दुःख से घिरा
राजनीति और आतंक की
साँठ-गाँठ पर
करने लगता है विश्लेषण
नैतिकता उसकी जड़ों में
पानी की तरह
घुल-मिल गयी है
व्यभिचार, भ्रष्टाचार,
गरीबी व मँहगाई
उसकी सोचों में पलकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मथने लगते हैं
उसकी पीड़ा
समय के साथ
उसका कोई तालमेल नहीं है
वह समय में होते हुए
समय से बाहर
लगा देता है छलांग
वह अपने भरोसे
सारे देश को
बदल देना चाहता है
उसे पक्का भरोसा है
कि एक चिनगारी भी
सुलगा सकती है आग
वह उस चिनगारी के लिए
आजकल सबकी अंगीठियाँ
तलाश रहा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विज्ञापन की रुलाई

उसके रोने को
हँसने की तरह देखते हैं सब
अभाव के चेहरे पर
हँसी का विज्ञापन है
वह हँसी के बारे में
बहुत कुछ
जानना चाहता है
जैसे बच्चे
जानना चाहते हैं
देश के बारे में
गाँधी के बारे में
आज़ादी के बारे में
उस सरहद के बारे में
जहाँ गोलियों की बारिश में
चलती हैं कक्षाएँ
जहाँ ख़तरा धूल
और पानी के जैसे
हवा में घुल-मिल गयाा है
वह जानता है
जब तक हँसता रहेगा
भरता रहेगा उसका पेट
मिलता रहेगा काम
और जैसे ही रोयेगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुत्कार देंगे सब के सब
वह अपनी हँसी को
फूल की तरह सहेजता है
ताकि मुरझा न जाए
उसकी मुस्कान
वह इसी मुस्कान की बदौलत
अपनी गरीबी से
लड़ता आया है
अपने भूख के गड्ढे को
भरता आया है
उसे इतना मालूम है
कि सस्ती चीज़ों के
विज्ञापन में महंगे लोग
जी-जान से जुटे हैं
और एक न एक दिन
सारी सस्ती चीज़ें
महंगी होती जायेंगी
तब वह रोयेगा
विज्ञापन की रुलाई
और जीत जायेगा युद्ध।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिसके होने में बची रहती हूँ मैं

इन दिनों
याद आता है घर
याद आती है माँ
याद आती है
अपने भीतर की
खोयी हुई लड़की
समय एक डोंगी है
जिसे अपनी नदी में तैराकर
पहुँच जाता हूँ अक्सर
स्मृतियों के गाँव
इन दिनों जब याद आता है
पिता का क्रोध
वात्सल्य उचककर
मरे कंधे पर
रख देता है हाथ
भाई-बहिनों की
हसीन दुनिया में
खो जाता है वर्तमान
खो जाती है समृद्धि
खो जाता है सम्मान
बस वही बचा रहता है
जिसके होने में
बची रहती हूँ मैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन दिनों मुश्किलें इस कदर
बढ़ गयी हैं
कि याद आती है वही
अपनी सहज व आसान सी
दुनिया
माँ के आँचल में
समेटकर सारा अवसाद
हम जब नाचने लगते थे
कहीं और कैसा भी हो डर
लपक लेते थे पिता
हम ताप व आग की
दुनिया से बेख़बर
एक ऐसे घर में रहते थे
जहाँ दीवारें भी हँस पड़ती थीं
हमारे साथ
और रो पड़ता था आँगन
हमारी हल्की सी
खरोंच पर
मैं ऐसा घर
नहीं बना पायी अब तक
या शायद यह घर ही
मेरा नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिता झोले में भरकर स्वप्न लाते थे

जब हमारे जीवन में
माँ थी
होली सिर्फ़
एक त्योहार नहीं था
हमारे लिए
बल्कि एक उत्साह था
जिसकी रोशनी में
चमकने लगते थे
हम सबके चेहरे
पिता झोले में भरकर
स्वप्न लाते थे
और हम अधीर होकर
डूब जाते थे
उन स्वप्नों के बीच
पिचकारियों में भरकर रंग
मालपुए की खुशबू से
करते थे लड़कबतियाँ
गुझियों के किनारों पर हम
करते रहते थे चित्रकारी
हम राजा थे
अपने-अपने
उल्लास में पगे हुए
अपने-अपने रंगों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सराबोर
माँ के चेहरे की मुस्कान
हमारा स्वर्ग थी
पिता पूरे अधिकार से
सौंप देते थे घर
माँ के हिस्से में
और हो जाते थे
निश्चिन्त
वो घर हम सबका
सगा और अपना था
जैसे ही स्कूल से होती थी छुट्टी
हम दौड़ पड़ते थे
अपने-अपने घरों की ओर
हमारे होने को
साबित करता था हमारा घर
और बचाए रखता था
हम सबके
चेहरे की मुस्कान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके चेहरे की धूप

वह लड़की जाने कहाँ
गुम हो गयी
जो बचपन से अब तक
रहती थी मेरे साथ
और जिसके इशारों पर
नाचती रहती थी मैं
मैं कोई औा हूँ
इतनी चुप्पियों के बीच
ख़ामोशी
अंधकार बनकर
उतर रही है मेरे भीतर
मेरे सूरज में
अब नहीं रह पाती धूप
एक बादल है
बूँदों से ढंका हुआ
मेरे अंदर का मोर
भूल चुका है अपनी थिरकन
मेरे जंगल
पतझर बन गये हैं
हवाएँ पूछती हैं
अक्सर मेरा हाल
और मैं चल पड़ती हूँ
जीवन की ओर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस घर की ओर
जहाँ रहता आया है
मेरा होना
कितना सहज
और आसान सा है
उसका नक्शा
कि पूरी धरती पर
कहीं भी छोड़ दी जाऊँ
खोज सकती हूँ
अपने घर की खिड़कियाँ
आँगन की खिलती हुई धूप
गुलाब, हरसिंगार व
चमेली के पौधों वाला लॉन
और बरामदे में बिछी हुई
पिता की खटिया
वहाँ सब के सब
बतियाते हैं मुझसे
मुझे कोई भी
अकेला नहीं छोड़ सकता
अब जहाँ रहती हूँ मैं
एक अज़नबी सी
दुनिया है
जैसे किसी और के घर में
रहना हो रहा हो मेरा
यहाँ सारे के सारे पौधे
फूल के बग़ैर ही चुप से खड़े हैं
कोई रंग नहीं है उनमें
जब भी रोपती हूँ
तुलसी
जल जाती हैं पत्तियाँ
यहाँ नहीं चल पाती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी मरजी
बस एक आदेश है
घर के कोने-कोने में
पसरा हुआ
यहाँ एसी, कूलर, फ्रीज
और गीजर की दुनिया है
मुझे कच्चे घड़े की
मीठी खुशबू
खींचती है अपनी ओर
मुझे खुली हुई छत की
ठंडी हवाएँ
देने लगती हैं आमंत्रण
याद आती हैं
लकड़ी के चूल्हे पर
फूलती हुई गरम-गरम रोटियाँ
और माँ का स्नेहिल चेहरा
याद आता है वह लड़का
जो बरामदे में
देखकर मुझे
सीटियाँ बजाता हुआ
साइकिल से
निकल जाया करता था
पता नहीं कहाँ होगा वह
उसके चेहरे की धूप
अब भी मेरा पीछा करती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी आवाज़

मैं अपने स्कूल की
सबसे मेधावी छात्रा थी
इतना ही नहीं
नृत्य हो या नाटक
खेल हो या भाषण
कविता हो या गीत
हर जगह हर ओर
मेरा ही बुलावा था
एक अकेली मैं
भर देती थी
सबके खुशियों की झोली
और सबके सब
संतुष्ट हो जाया करते थे
मेरी आँखों में तैरता था
एक चमकता हुआ सपना
और सपने में घर
पर ऐसा नहीं था
कि देश मेरी परिधि के
बाहर था
अपनी छोटी सी चिन्ता में
लहराते हुए तिरंगे की धड़कन
मुझे प्रेम से
सराबोर कर देती थी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं गाँधी, सुभाष,भगत सिंह,
आजाद
सबके किरदारों में
फिट हो जाती थी
लाग वाह-वाह कर उठते थे
और मैं अपनी चेतना की
आँखों से
आज़ादी की लड़ाई में
शरीक हो जाया करती थी
जो मेरे जन्म से
कई वर्षों पूर्व लड़ा गया था
स्कूल से कॉलेज का ओहदा
थोड़ा बड़ा हुआ
राजनीति मेरी रगों में
लहू बनकर दौड़ने लगी
कितना कुछ रहता था
करने को
कितना कुछ सोचा जाता था
देश के बारे में
उन लोगों के बारे में
जिनके बारे में
न सोचे जाने की
कसमें खा ली गयी थीं
पर जब घर मिला तो
धरा रह गया
सारा का सारा एहसास
आज मेरे पास घर है
घर जैसी आत्मीयता नहीं
एक थकान है चारों ओर
मुझे निगलती हुई
मैं बंद दरवाज़े की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सांकल खोल
लौट जाना चाहती हूँ
अब अक्सर पुकारने लगी हैं
मुझे वो जगहें
जहाँ मेरे होने को
ठीक-ठीक समझा गया था
जहाँ जाना गया था मुझे
मेरी सारी सच्चाइयों के साथ
जहाँ जीने के लिए
मुझे नहीं करना था
कोई स्वांग
जहाँ मेरे एक सच से
सुलग उठती थी
चिनगारी
और मेरी आवाज़ में
शामिल हो जाती थीं
सैकड़ों आवाज़ें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम जब अमृत उगायेंगे

तुम सामंत हो
वज़ीर हो या बादशाह
यह चमकता हुआ सिंहासन
हमने ही सौंपा है
तुम अमरीका से
करते हो परामर्श
और हमें ठुकरा देते हो
भला वो क्या जानेगा
भारत के बारे में
हमारे आवेगों,
संवेगों के बारे में
हमारे घरों व माँओं के बारे में
हमारी उस भूख के बारे में
जो अँतड़ियों में जलकर
आग बनती जाती है
हमारी गायों, भैंसों व
बकरियों के बारे में
हमारे खेती के
औजारों के बारे में
हमारे होरी व धनिया के बारे में
हमारे उन आदर्शों के बारे में
जो गंगा में धुलकर
हो जाते हैं पाक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ओबामा!
तुम्हारे मंसूबों, हथियारों
व बाजारों से
भला क्या बदल पायेगा यहाँ
तुम अपने जहर को
अपने ही खेतों में छीटो
हम जब अमृत उगायेंगे
सौंपेंगे उसकी कुछ बूँद
और बदल जायेगा
अमरीका का स्वभाव
हमारी आकाश-गंगा में
उज्ज्वल धाराएँ हैं
हम तैरकर पार कर लेंगे
दुखों का समंदर
और इन सिरफिरे सामंतों को
जो संसद के रखवाले हैं
और जो अमरीका की
भाषा बोलते हैं
सिर के बल चलाकर
भारत की
धरती पर खड़ा कर देंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्हें कोई जंगल क्यों नहीं अपनाता

अब मैं नहीं हूँ
तो कैसा लगता है
घर-बार
माँ तुम्हारी कोयले वाली
अंगीठी पर बनती हुई चाय से
निकलती थी जब भाप
सुबह अंगड़ाई लेकर उठ जाती थी
माँ मैंने बाबू जी को
हँसते हुए कभी नहीं देखा
वह जब क्रोध में चिल्लाते थे
तो कभी-कभी
हँस भी पड़ते थे
उनका चिल्लाना ही
उनकी खुशी थी शायद
जो क्रोध के लिबास में
दिखाती रहती थी
अपना दबदबा
माँ बाबू जी को
कोई न कोई मौका चाहिए था
तुमसे लड़ने का, रूठ जाने का
और मनाने का
हम सब कितने शातिर थे तब
मैं, मोनू और बंटी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक पूरी टोली, एक देश, एक समूह
अब इतिहास के पन्नों पर
ठिठुरा सा पड़ा है
हमारा अतीत
बीते समय में
जीने का सुख लिए
सिसकती रहती है रात
कभी-कभी लगता है
अब कोई सपना नहीं है
हमारे पास
जब सपने थे
तो आजादी से
हमारा कोई परिचय नहीं था
अब इतनी कैदें हैं
कि हम भूल गये हैं ख़्वाब
माँ मेरे बारे में
क्या-क्या बातें करते हो तुम लोग
मेरी निडरता व मनमानी करने की जिद से
तुम डरती रहती थी न
मैंने छोड़ दी हैं
सारी की सारी ज़िदें
माँ एक घर की खातिर बेटियाँ
क्यों करती हैं महाप्रयाण
उन्हें कोई जंगल
क्यों नहीं अपनाता
जहाँ अपने भय
व अँधेरों से निकलकर
खुले आसमान के नीचे
जीना सीख लें
दुनिया की ये उपेक्षित बिरादरी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वसंत की हथेली पर

जब भी पाने की
कोशिश में होती हूँ
छूटती जाती हैं स्थितियाँ
वह कोना
जो सिर्फ मेरे होने को
करता था चरितार्थ
किसी की उपस्थिति से
भरता जा रहा है
जहाँ-जहाँ
और जिन-जिन जगहों में
रख छोड़ी थीं उपस्थितियाँ
चिपक गये हैं उनसे
उन लोगों के हस्ताक्षर
जो मेरी पहचान के खिलाफ
अपनी ज़िद की भाषा में
इनकार की
इबारतें लिखने लगे हैं
एक चोट
अपनी पीड़ा की परवरिश में
संवादों के
पुल से गुजरती है
और डूब जाती है
तकलीफ की नदी में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे रेशमी फूलों को
उन खुशबुओं ने
बाइज्जत बरी कर दिया है
जो संबंधों की जेल में
झेल रहे थे
आजीवन कारावास
मुझे अब मौसम के बारे में
छोड़ देनी चाहिए
अपनी ज़िद और रंगों को
कागज पर फैलाकर
लिख देना चाहिए बसंत
मुझे उन संबंधों को
अलविदा कह देना चाहिए
जो वसंत की हथेली पर
पतझर की तरह गिरते हैं
और सूख जाती हैं
हरे रंगों वाली पत्तियाँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक कोरा कागज है दुख

एक कोरा कागज है दुख
मैं लिखती हूँ मौन
और एक ध्वनि काँपती है
हवा में बेतरतीब
मैं लिखती हूँ विषाद
और पीला पड़ने लगता है
वक्त का चेहरा
मैं लिखती हूँ अंधकार
और समय का परिन्दा
अपने पंख फड़फड़ाने लगता है
मैं आँसू कभी नहीं लिखती
बारिश खुद-ब-खुद
आ जाती है मेरी चौखट पर
और नदी बन जाती है
मैं कभी नहीं लिखती
असफलताएँ
क्योंकि मेरे गीत
इनके जरिए ही
साँसों का दरवाजा खोलकर
मेरी आत्मा में प्रवेश करते हैं
मैं कभी नहीं लिखती मृत्यु
क्योंकि यहीं से चलकर
कई-कई जन्मों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रवेश करती हूँ मैं
और अनन्त हो जाती हूँ
दुख एक गति है
जो अपनी स्थिरता में
हो उठता है मूल्यवान
एक यज्ञ है दुख
जिसकी अग्नि की समिधाएँ
फूँकती हैं प्राण
और जी उठता है आदमी
दुख एक ऐसी अंतरंगता है
जिसके परिचय से
अपरिचय के सारे सद्व्यवहार
आईना बन जाते हैं
प्रेम है दुख
जो विरह के जंगल से गुजरकर
आत्मा की बस्तियों में
शुमार हो जाता है
फेनिल लहरों सा दुख
रेत के तजुर्बे से होता है
एकाकार
और लौट जाता है
सुबह के सूरज के साथ
दुबारा जी उठने के लिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माँ की पुरानी लालटेन

मेरे घर में
अब भी रखी है
माँ की पुरानी लालटेन
स्मृतियाँ खोलती हैं
समय का दरवाजा
और लालटेन से झाँकने लगता है
माँ का चेहरा
रोशनी फैलने लगती है
मेरी अन्त:शिराओं में
एक दिक्, एक काल और एक संवेदन से
गुजरती है लालटेन
और बचपन हो जाती है
तितलियां, फूल और
पतंगों वाला मौसम है
धूप पिघलती है
और बादल बन जाती है
अतीत की बारिश है
काग़ज़ की नावें हैं
मानो वर्तमान कभी रहा ही नहीं
कुछ उल्लास
और चीख के समंदर में
समय की डोंगी तैर रही है धीरे-धीरे
एक महक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो मेरे बचपन की हँसी थी
मेरे भीतर से चलकर
वहीं उस जगह, उस क्षण में
व्यवस्थित हो जाती है
उस समय सांझ होते ही
गुल हो जाती थी बिजली
हम अपनी-अपनी किताबें बंद कर
खेलने लगते थे अंत्याक्षरी
जैसे अंधेरे कैनवस पर
रोशनी के गीत लिख रहे हों
अंधेरा कोई भय नहीं था
उस समय हमारे लिये
बल्कि एक विश्वास था
जिससे गुजरकर
रोशनी की आकृतियाँ
गढ़ने में दक्ष होती जाती थीं
हमारी कलाएँ
हम अंधेरे के पारखी
लालटेन की अर्थवत्ता को
प्रकाश के सिरहाने
करने देते थे विश्राम
और चमचमाने लगता था रात का आईना
माँ लालटेन के सहारे
रोशनी के वजूद से करती थी साक्षात्कार
और धुंधली इबारतें चमकने लगती थीं
लालटेन
हमारे बचपन का इतिहास है
जिसमें दर्ज़ है हमारा होना
लालटेन हमारी पूँजी है
जो माँ से जुड़कर
हमारे आत्मा की धरोहर बन जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरे रंगों में शामिल हो जाता है

वह भय रोपता है
और सींच डालता है
कोपलें
वृक्ष बन जाता है संशय
प्रेम के सारे दरवाजों पर
खड़ा हो जाता है
एक बीमार यकीन
जहाँ कहीं भी ठहरी हो
आश्वस्ति
रोशनी की इबादत को
घेरने लगती है
स्याह कठपुतलियाँ
अपनी ज़िद
और अपनी दुविधा में
घिरे हुए आदमी को
सूरज पर शक हो जाता है
हरे रंगों में
शामिल हो जाता है
नीला षड्यंत्र
इस कदर हावी हो जाता है
अंधेरा
कि चमकीली रोशनियाँ
धुंधुली पड़ने लगती हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके भीतर
जैसे डूबते जाने की
तरकीब में
पारंगत हो रहा हो कोई
कि जैसे
हर ओर शोर का
सैलाब उठ रहा हो
और शब्दों के अर्थ
खोते जा रहे हों
जैसे गुम हो रहा हो कोई
अपनी ही अवमानना की
एकान्त गलियों में
उसकी आँखों की चमक में
इन दिनों
अनिश्चय और सनकीपन की
बदलियाँ घिरने लगी हैं,
उसे एक मज़बूत
आलम्ब के सहारे
खींचा जा सकता है
अंधेरे के दलदल से
उसे प्रेम के सहारे
जोड़ा जा सकता है
सूर्य की चमकीली
रश्मियों से
उसकी खामोशी की
नि:शब्दता को
वाचाल लहरों की ओर
मोड़ा जा सकत है
उसे एक तिनका विश्वास
के भरोसे दोबारा
खड़ा किया जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भीगने लगता है तकिया

मेरे उदास मौसम में
सूखी पत्तियों सी
गिरती हैं यादें
और लम्हों के गलीचे में
तुम्हारे पाँवों की छुअन
मौसम बरसना चाहता है
धुआँधार
तुमने मेरे नाम के फूलों से
गढ़ी थी जो कविता
उसकी पंखुरियाँ सहेज ली हैं मैंने
डायरी के पन्नों में
सूखते पलों के पसीने में
रची-बसी है तुम्हारी देह गंध
समय के सिरहाने तकिया लगा
निरखती हूँ ठहरे हुए वसंत को
अचानक चमकता है समय का आईना
तुम खोने लगते हो
तुम्हारे होने को व्याख्यायित करने की
तमाम दलीलों में हर बार
एक कामयाब बहस की तरह
जीतती हूँ मैं
फिर भी जाने क्यों
भीगने लगता है तकिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बारिश है लड़की

बारिश में नाचती है लड़की
बूँदों के संग नाचते हैं सपने
उसकी देह से उठकर
धरती पर फैलने लगती है खुशबू
फैलने लगता है आह्लाद
धीमी-धीमी आँच की
मद्धिम सी आग में
बारिश है लड़की
बूँदों की पायल पहने हुए
छन-छनाछन करती हुई
नदी बनती हुई
लड़की के ख़्वाबों में
तिरता है आसमान
तिरता है चाँद
धूप उसके जिस्म से
माँगती है रोशनी
और सूरज बन जाती है
सात रंगों के उत्सव में
बोझिल हैं लड़की की आँखें
नशे की बारिश से
खिलता जा रहा है
लड़की की देह का
इन्द्रधनुष।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह तुम होते हो

एक नामालूम सी बेचैनी में
जब सब कुछ
होते हुए भी
कुछ नहीं होता
मैं जानती हूँ कि वह
तुम होते हो
जो नेपथ्य से देते हो
आमंत्रण और मैं तुम्हें
टाल रही होती हूँ
काश! ऐसा कुछ होता
कि समय व स्थान की
परिभाषाएँ
वर्तमान में अपनी उपस्थिति से
बेख़बर
एक अलग दुनिया में
टहल रही होतीं
वक़्त आईना नहीं होता
और दरवाज़े झरोखों की संस्कृति से
अलग की कथा में
वर्तमान को धरोहर की तरह
सँभाल रहे होते
हमारे सिर पर
नैतिकता की कोई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छत नहीं होती
हम मिल रहे होते
बगैर नैतिक हुए
कि मनुष्य होना
सबसे बड़ा जोख़िम है
यह प्रेम में ही
जाना जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था कुछ जो खींचता था

था कुछ जो खींचता था
उस ओर
शायद उम्मीद थी
जो अपनी ही
सतर्क कोशिशों की
कामयाबी पर
खुश हो जाया करती थी
एक इतिहास था
जहाँ स्मृतियों के खंडहर में
अतीत को
लौटाया जा रहा था
आकृतियों-अनुकृतियों की
भावुक भंगिमाओं में
संवेदनशील स्पर्शों की
आत्मीय भाषा थी
और भी बहुत कुछ था
जिसे व्याख्यायित करना
उतना ही कठिन था
जितना अपने आप से
जूझते हुए
खुद को गलत ठहराना
या अपनी जीत को
मुक़म्मिल करते हुए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने पक्ष में कोई तर्क देना
नदी बहती रही एक ही
दिशा में
खुशबू बंधी रही
एक ही जगह
कोई ज़िद थी या जुनून
कि हमेशा ये इच्छा रही
उस ओर से भी
उतना ही महत्त्वपूर्ण हो
मेरे भीतर का शख़्स
अजीब आख्यान थे
जीवन-दर्शन था
जीवनोपयोगी गूढ़ रहस्यों की
अनछुई घाटियाँ थीं
उतरना था अंधेरे कुएँ में
शून्य से शून्य का
महामिलन हो जैसे
आत्मा के महासागर में
परमात्मा की
विजय की तरह
जाना ही था उस ओर
था कुछ
जो खींचता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहो क्या करूँ मैं

कहो क्या करूँ मैं
मेरे भीतर ही हो रहा है
मेरा प्रतिरोध
नदी तटबंध तोड़ती
टकरा रही है
अविचल खड़े
विशालकाय चट्टानों से
कहीं यह मेरे हिस्से की
उस पराजित स्त्री का
प्रतिशोध तो नहीं
जो इतिहास के पन्नों में
दफ़ना दी गयी
कहाँ से उठता है
क्रोध का
उफनता हुआ ज्वार
सूखने लगती है ममता
बेटे के मासूम चेहरे में
उसके भावी पुरुष से
करने लगती हूँ संवाद
उसकी ज़िद
और उम्र के दरमियाने
अतीत की
एक लड़की का संकल्प

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदास रंगों की खुशबू से
भीगता है देर तक
वह लड़की अपने प्रतिशोध को
अपनी ममता के
बहीखाते से
घटाती छटपटा रही है
उफ! यह कैसी आग है
धीरे-धीरे उतरता है
क्रोध का ज्वार
देखती हूँ
बेटे का मासूम चेहरा
भींच लेती हूँ
उसे आलिंगन में
अब सिर्फ़
माँ बची रहती है
उसी स्त्री का
कोई अता-पता नहीं है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरियाली की मर्यादाएँ

इस बदरंग दुनिया को
रंगों में बदलकर
चमकीली भोर की ओर
चल पड़ेगा
हमारा कारवां
थोड़ी सी हँसी
और थोड़ा सा धैर्य
बदल देगा धरती का नक्शा
क्यों न षड्यत्रों की जगह
एक सहज मुस्कान से
करें जिन्दगी का स्वागत
और सूरज के
गुमनाम ठिकानों से
छीन लायें रोशनियाँ
मायूस चेहरों की
फिसलती हँसी में
ठहरा हुआ है
थोड़ा सा विश्वास
उसे फैलाकर उजली धूप में
दूर कर वक़्त की
अंधेरी रातों का अवसाद
चिन्ताएँ
हमारे भीतर से चलकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फैल जाती हैं पूरी पृथ्वी पर
बबर्रता और कठोरता के
सारे उपमान
खेल रहे हैं
कब से आतंकी खेल
हम बदल देंगे इनका
सामन्ती मिज़ाज़
जहरीले मंसूबों वाले
सारे आक्रोशों को
पानी में बदलकर
हम उगा लेंगे इन्सानियत की
लहलहाती फसलें
समय के वहशीपन के बावजूद
हम फतह कर लेंगे
इन्सान का
हारा हुआ विश्वास
और नदियाँ हो जायेंगी
प्रदूषण-मुक्त
जंगलों में बची रहेंगी
हरियाली की मर्यादाएँ
खरगोशों व मृगछौनों को
कोई भय नहीं होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुबूलनामा

एक आसान सफ़र का
मुश्किल-सा
कुबूलनामा है यह शहर
यह शहर जिसने
मेरे ख़्वाबों को जगह दी
मेरी धूप को पाला-पोसा
मुगलिया सल्तनत में
अकबर की तरह
बनाए रखी मेरी साख
यह शहर
जिसकी मिट्टी में
उगी मेरी पौध
एक वृक्ष अपने फूल व
खुशबू के साथ
लहलहाया-महमहाया
और मेरी मुट्ठी में कैद आसमान
पसरता चला गया
यह शहर जिसने छेड़ी
अट्ठारह सौ सत्तावन की जंग
और क्रान्ति के तजुर्बे से गुजरकर
भयमुक्त होने लगी
मेरी झांसी की रानी
यह वही शहर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिसकी सख़्त दीवारों में
चुनी गयी
मेरे भीतर की अनारकली
और बुद्ध बनती गयी
मेरी चेतना
यह शहर कभी मेरे लिए
उन्नीस सौ चौरासी के
दंगों-सा भी सुलगा
और क्रोध और नफरत की मशालें
मेरे वजूद को जलाकर
करने लगीं खाक
फिर मैंने कभी इस शहर को
अजनबी नहीं होने दिया
मैंने इसी शहर में
लिखे खुशबू के गीत
और रंगों की बारिश से
नहला दी उनकी देह
कभी भी अलविदा शब्दों के
लरजते आँसू
पछतावे के लिबास में
नहीं छटपटाये
मेरी धड़कन, मेरी साँसों में
बसा यह शहर
मेरे तजुर्बे का
एक ऐसा ताजमहल है
जिसे देश में
मेरे नाम से पहचानते हैं लोग
जहाँ कबीर और गालिब
मेरी रोशनी में
रहने लगे हैं आजकल
जहाँ कुँअर नारायण की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भरपूर नफरत करने की चाहत
हाथ मलती रह जाती है
मुझे इस बात का फख्र है कि
मैं एक ऐसे शहर की बाशिंदा हूँ
मुझे इस बात का
पक्का यक़ीन है कि यह शहर
मुझे कभी मुर्दा नहीं होने देगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और तब शायद तुम भी

मैं रोशनी की इबारत में
लिखना चाहती हूँ गीत
तुम अंधकार हो
जहाँ
भटकने लगता है प्रेम
बाज़ार हो या कि व्यापार
हर जगह तलाश लेती हूँ
आत्मीयताएँ
ईर्ष्या व छल की
चमकीली दुकानों में
खोज लेती हूँ
स्वाभाविक
अपनत्व की
नरम सी धूप
एक तुम हो
जो उफनते हुए दूध की तरह
बिखर जाते हो
उन मुश्किल सी जगहों में
जहाँ से तुम्हें उठाना
मुमकिन नहीं
तुम प्रेम के गहरे उद्दीपन का
कामुकता की छुरी से
रेतते हो गला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं उसे फैलाकर पूरी पृथ्वी पर
बदल देना चाहती हूँ
समय का स्वभाव
मैं मनुष्य हूँ
इसलिए मुझे अच्छी लगती है
यह दुनिया
उस अदृश्य के सारे दृश्यों में
आलोक की तरह फैलाकर
अपना अस्तित्व
आतंक और हिंसा की जड़ों में
बो देना वाहती हूँ
अपनेपन का बीज
तुम समय की ओर
करके संकेत
मुझे भरमाना चाहते हो
यह ठीक है कि प्रेम
मेरे भीतर से चलकर
तुम तक ही पहुँचता है
बावजूद
इसके लगने लगा है
कि मुश्किल है
तुम्हें बदल पाना
मैं अपनी कोशिश की
व्यर्थताओं में
एक सार्थक सूरज के जरिए
धरती के अंधकार को
मिटाकर
सौंप दूँगी पृथ्वी को
अपने भीतर का गहरा प्रेम
जो मैंने तुम्हें
सौंपना चाहा था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं सौंप दूँगी नदियों को
अपने गीतों का शब्द-समूह
और अमृत कर दूँगी
पानी का अन्तर
हवाओं में
फैल जायेगा हमारा प्रेम
और प्रदूषण मुक्त हो जायेंगी
साँसें
और तब शायद तुम भी...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम पहाड़ हो जाना चाहते हैं

हम समानता की बात
करते हुए
असमानता के
अनुभवों से गुजर रहे हैं
हम पृथ्वी की
बात करते हुए
पहाड़ हो जाना चाहते हैं
क्या पहाड़
समतल ज़मीन पर
नंगे पाँव दौड़ सकता है
क्या पहाड़ के सीने में
भरी जा सकती हैं
पृथ्वी की विनम्रताएँ
क्या पहाड़ को
संयम और धैर्य के आईने में
पृथ्वी की तरह
परखा जा सकता है
पृथ्वी की कंपन
और गतियों में
पहाड़ की संवेदनाएँ
भरी जा सकती हैं क्या
आखिर हम पहाड़ होना
क्यों चाहते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम विचलन व अस्थिरता के
जटिल मानकों से
गुजरते हुए भी
क्यों नहीं समझ पाते
जीवन की सहजताएँ ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संधियाँ पराजय के पश्चात् ही क्यों

सोचो विनम्रता के बारे में
झुक जायेंगी
सारी की सारी
कठोरताएँ
संधियाँ पराजय के
पश्चात् ही क्यों
विजय के पूर्व भी
ज़रूरी हैं मित्रताएँ
सोचोगे
जब धूप के बारे में
अंधेरे का अवसाद
पिघलने लगेगा
शांति और समझौतों से भी
टाले जा सकते हैं
युद्ध और विनाश के
मारक क्षण
निर्माण की दहलीज पर
खड़े होगे जब
विध्वंस की
तमाम रणनीतियाँ
मौन हो जायेंगी
सोचोगे
जब प्रेम के बारे में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,New Delhi.Digitized by eGangotri.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ईर्ष्याएँ नहीं जन्मेंगी
दुर्भावना की कोख से
पानी के बारे में
सोचते हुए ही
आग की दुर्नीतियों से
बचा जा सकता है
हरेपन का ख़्वाब
मुस्कुराहटों में
घोल देता है जादुई रंग
हँसी के समंदर में
पिघलती हुई खामोशी से पूछो
कितना अद्‌भुत रंग है
लहरों की मादक
चितवन का।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भीतर कोई आईना है

भीतर कोई आईना है
झनझनाता है, टूटता है
और बिखर जाता है
कोई जितनी तीव्रता से
करता है प्रवेश
उतने ही वेग से
दूर होती जाती है
उसकी पदचाप
शक्लें बदल जाती हैं अक्सर
अपने-अपने
प्रतिमानों के साथ
कितने अंधेरे
अपनी रोशनियों से गुजरकर
स्याह हो जाते हैं
और कितने बादल
पिघलने लगते हैं
अपनी ही धुआंधार
बारिश के दरमियान
मौन सबसे प्रखर है
जो संवाद के पक्ष में
दृढ़ता से खड़ा है
जिनके पास सूरज है
वे भी नहीं जान पाते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिन का स्वभाव
मैंने रात को
संभालकर रखा है
अंधेरों की
हिफाजत के लिए
और मन की
विनम्रता के लिए भी
कोई कुछ भी बोले
आँसू व दुख
जब तक होते हैं साथ
आदमी को आदमी
समझे जाने की अनुकूलताएँ
बची रहती हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्त्री जब भी रोयेगी

स्त्री जब भी रोयेगी
समय की आँखों से
टपकेंगे आँसू
उसके पास
आर्द्रता की एक नदी है
जिसमें
भीजती रहती है साँझ
तुम अपने होने की
कथा लिखोगे और स्त्री को
खारिज कर दोगे
तुम अपने हिस्से में
रोशनी लिखोगे
और धुएं की लकीरें
बन जायेंगी स्त्री का भविष्य
तुम्हारे सूरज होने से
जल जायेगी स्त्री की धूप
तुम्हारे हिस्से में
जब भी होगी विजय
पराजय बन जायेगी स्त्री
ऐसा भी तो हो सकता है
तुम फूल लिखो
और खुशबू बन जाये स्त्री
तुम पानी लिखो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और विश्वास बन जाये स्त्री
फिर इतिहास
स्त्री के अर्थ को
विस्तार के महासमुद्र में
फैलाकर लहरें बना दे
और रेत की सारी स्मृतियाँ
नम हो जायें
स्त्री की कहानी सुनकर
स्त्री की खुशी
एक बहता हुआ झरना है
जो गिरता है
अपनी ऊँचाई से
और विनम्र हो जाती हैं
धरती की भावुक सम्पदाएँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब तुम हो तो क्यों...

जब तुम हो मेरे पास
तो क्यूँ है-
ये धुआँ, घुटन
मुरझाते फूलों की उदासी
नदी की गुपचुप खामोशी
ढलते हुए सूरज की परछाइयाँ
और खालीपन के पहाड़
सार्थकता के सारे संवाद
निरर्थक भावों के शब्दकोशों में
क्यों कलपते रहते हैं
अपनी विवश ध्वनियों के साथ
जब तुम हो तो क्यों
हवा में खुशनुमा शाम की चहक
और मीठी सी महक वाले गुलाब के लिए
तरसा करता है मन
क्यों अनाथ सी परछाइयाँ
मेरी पृथ्वी के अंधकार में भटकती रहती हैं
तुम्हारे प्रकाश से उनका परिचय
इतना धुँधला क्यों है
जब तुम हो मेरे पास
मेरा होना
इतने उदास विकल्पों के आईने में
क्यों देखता रहता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपना चेहरा
थकान मेरी रगों में उतरकर
पीड़ाओं से करती है संवाद
और बीमार हो जाती हैं स्थितियाँ
मैं हँसना चाहती हूँ
और जीना भी
तुम्हारी धड़कनों का कोई स्पन्दन
मेरा सहचर बनकर
क्यों नहीं गाता
जीवन के गीत
समय के सबसे मारक
क्षणों का
इतिहास है मेरे पास
तुमसे संदर्भित व तुमसे उच्चारित
अर्थों के बुलावे पर
आकुल सा भागता हुआ
तुमसे मिलने को
छटपटाता हुआ
जब तुम हो तो मेरी रोशनियाँ
विलाप के उत्सव में शामिल
आत्माओं की
प्रतिनिधि क्यों हैं
जब तुम हो तो क्यों है
मेरे भीतर
अतृप्ति के समंदर में
खौलता हुआ
विवशता का अथाह
दावानल
और धूप में नीली
लपटों वाली आग।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चेहरे जंगल बन चुके थे

शहर के पास
अब कोई चेहरा नहीं था
सारे के सारे चेहरे
जंगल बन चुके थे
जहाँ कुछ भी
घट सकता था
कैसा भी
सोचा जा सकता था
अंधेरों की रोशनी के
लिबास में तब्दील कर
सूरज के अपहरण के बारे में
योजनाएँ
बनायी जा सकती थीं
हरियाली को आग के
अहंकार से मिलवाकर
भस्म की जा सकती थीं
मनुष्यता की फसलें
बर्बरता के बारे में
आख्यान गोष्ठियों के सिलसिले
अपनी पूरी सक्रियता के साथ
मंचित हो सकते थे जहाँ
और अपराधों की
गुलजार नगरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहजता से
बसायी जा सकती थी
ग़ैर कानूनी जो भी था
उसे अपने कानून के
हिसाब से व्यवस्थित किया
जा सकता था
इन जंगल हुए चेहरों ने
दुख व तकलीफों के
सारे नकाब उतारकर
ईश्वर के समकक्ष
अपनी सत्ताएँ खड़ी कर लीं
उन्हें नहीं पता था
कि जंगल के भी
अपने उसूल
व कानून होते हैं
जंगल के भीतर की
हवाओं और नदियों का आवेग
आँसू के
हिस्से के दुख को
वृक्षों की लताओं में बदलकर
सौंप देता है हमें
जीवनदायी औषधियाँ
जंगल में ही बसते हैं मोर
नृत्य के आनंद से
विभोर होती हैं
जिनकी थिरकनें
ऋषियों
मुनियों व तपस्वियों का
एक विराट
जीवन होता है जहाँ
भोग के प्रतिरोध में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,New Delhi. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रान्ति का
परचम लहराता हुआ
इन चेहरों ने
जंगल के आईने में
जितने भी मानचित्र बनाए
उनमें उनकी पृथ्वी की
अपेक्षाएँ ही
चलती रहीं लगातार
उन्हें भला क्या मालूम
कि जंगल शहर बनना
क्यों नहीं चाहता
उन्हें यह भी नहीं पता
कि शहर में उगे जंगलों को
किनकी साजिश से
करनी पड़ी थीं आत्महत्याएँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लाइव टेलीकास्ट

उनके क्रोध को
अपने भय की रस्सी से
मत खींचो
और-और दूर तक
ईश्वर बन जायेंगे वे
भक्ति, आराधना और प्रेम से
जरूर पिघल जायेगा
एक न एक दिन ईश्वर भी
पर ये जो नकली ईश्वर है
उनके बारे में
जितना डरोगे
और चुप बैठोगे
फैलता जायेगा इनका विद्रोह
आतंक
एक कारोबार की तरह
इनकी जड़ों में
डेरा डाले है
तुम्हीं काट सकते हो
इनकी जड़ें
तुम्हीं शोषण को
शोषण कहकर
अपने हक के बारे में
इन्हें दे सकते हो चेतावनियाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारी हड्डियों में
वज्र की ताकत है
जब भी जाल फेंकेंगे मछुआरे
फाड़ देना उन छिद्रों को
जहाँ से क्रोध
घमंड बनकर बोलता है
और तौलता है
तुम्हारे भूख का सामान
एक बार बारिश को
बादल बन जाने दो
और गरजने दो घनघोर
क्यों डरोगे भला
इन मानवीय प्रभुओं से
जो जीतने की खातिर
सत्ता के
शीर्ष पर बैठे हैं
और जिनका
लाइव टेलीकास्ट
एक चमकता हुआ
सिंहासन है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रंजना श्रीवास्तव

जन्म : 9 सितम्बर 1959, गाजीपुर (उ.प्र.)

शिक्षा : एम.ए., बी.एड.

प्रकाशित पुस्तकें : आईना-ए-रूह (ग़ज़ल-संग्रह), चाहत धूप के एक टुकड़े की, समक्ष थीं लालटेनें (कविता संग्रह)।

संपादन : साहित्यिक पत्रिका 'सृजन पथ' के सात अंकों का संपादन।

प्रकाशन : हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं वागर्थ, नया ज्ञानोदय, आउटलुक, इंडिया टुडे, अक्षर पर्व, परिकथा, पाखी, कादम्बिनी, सनद, पाठ, साहिती, सारिका, वर्तमान साहित्य, काव्यम्, राष्ट्रीय सहारा उत्तरप्रदेश, जनसत्ता, जनसत्ता कोलकाता दिवाली विशेषांक, संडे पोस्ट, निष्कर्ष, शब्दयोग, पर्वत राग आदि में कविताएं, कहानियां, समीक्षाएं एवं स्त्री विमर्श विषयक लेख प्रकाशित।

सम्मान : 'चाहत धूप के एक टुकड़े की' कविता संग्रह पर सिलीगुड़ी गौरव सम्मान, उत्तर बंग नाट्य जगत से विशिष्ट कविता लेखन के लिए सम्मानित। हल्का-ए-तामीर-द-अदब (मऊ आइमा), इलाहाबाद से साहित्य की महती सेवाओं हेतु प्रशस्ति पत्र।

पूर्वांचल की अनेक साहित्यिक-सामाजिक संस्थाओं से संबद्ध।

संपर्क :
श्रीपल्ली, लेन नं.-2, पो.ऑ. सिलीगुड़ी बाजार
सिलीगुड़ी (प. बंगाल)-734006
मो. : 9933946776

दिल्ली निवासी डॉ. दिनेश सेठी पेशे से रेडियोलॉजिस्ट और स्वभाव से कला प्रेमी हैं। साधारण चीज़ें में असाधारणता खोज लेना इनकी फोटोग्राफी की विशेषता है। एकल एवं सामूहिक प्रदर्शनियों में भागीदारी। बोधि पुस्तक-पर्व के पहले सैट की सभी दस पुस्तकों के आवरण छायाचित्र दिनेश सेठी के हैं। सम्पर्क : 09811207022

मूल्य : 10.00 रुपये
बोधि पुस्तक-पर्व
आवरण छायाचित्र : डॉ. दिनेश सेठी, दिल्ली छावनी

CC-0 Adamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant